सत्यमेव जयते

गणतंत्र दिवस परेड

Republic Day Parade

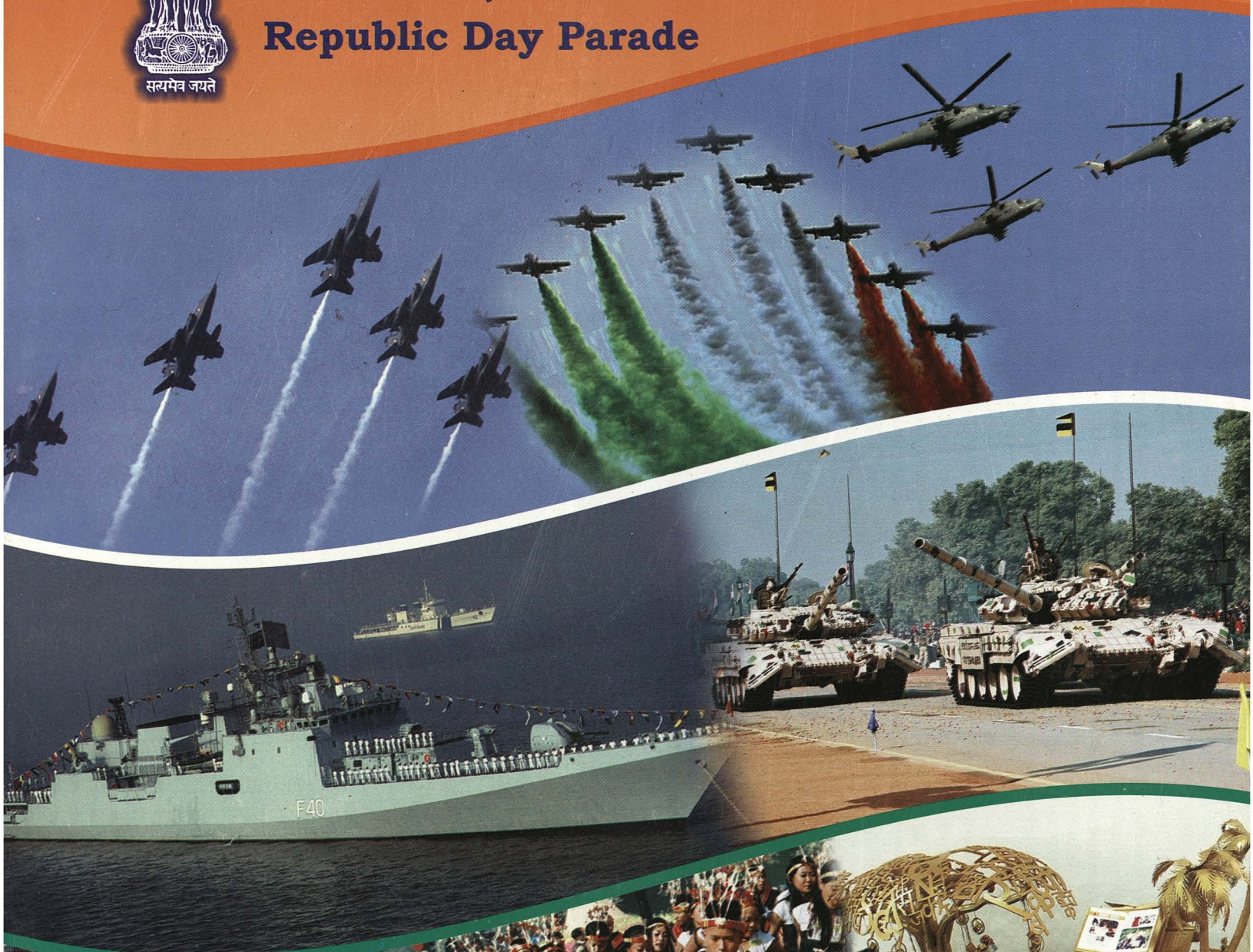

26 जनवरी 2013 (माघ 6, 1934)

26 January 2013 (6 Magha, 1934)

के. लो.नि. वि.
उद्यान

3

सत्यमेव जयते

गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

26 जनवरी 2013 (माघ 6, शक संवत् 1934)

26 January 2013 (6 Magha, Saka Samvat 1934)

कार्यक्रम

0957 बजे राष्ट्रपति का, मुख्य अतिथि, भूटान नरेश के साथ राजकीय सम्मान सहित आगमन ।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि की अगवानी ।

प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति तथा मुख्य अतिथि से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय ।

राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मुख्य अतिथि का मंच की ओर प्रस्थान ।

राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।

गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है ।

सांस्कृतिक झांकी ।

मोटर साइकिलों पर करतब ।

विमानों द्वारा सलामी ।

राष्ट्रीय सलामी ।

राष्ट्रपति का मुख्य अतिथि के साथ
राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान ।

Programme

0957 hrs. **The President, accompanied by the Chief Guest, The King of Bhutan, arrives in State.**

The Prime Minister receives the President and the Chief Guest.

The Prime Minister presents to the President and the Chief Guest, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.

The President, the Prime Minister and the Chief Guest proceed to the rostrum.

The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.

The Republic Day Parade commences.

The Cultural Pageant.

Motor Cycle Display.

Flypast.

National Salute.

The President, accompanied by
the Chief Guest, departs in State.

परेड क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलिकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप–कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

सेना

सवार दस्ते

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

एमबीटी अर्जुन

कवचित एम्बुलेंस ट्रैक्ड

ब्रह्मोस लांचर

पिनाका मल्टी बैरल रॉकेट
लांचर प्रणाली

सीबीआरएन रेकी वाहन

सर्वत्र पुल प्रणाली

मोबाइल एकीकृत नेटवर्क
टर्मिनल (एम आई एन टी)

रेडियो ट्रंक प्रणाली–मार्क–II
(आरटीएस मार्क– II)

हेलिकॉप्टरों द्वारा सलामी

The Order of March

Showering of Flower Petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

ParamVir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

MBT Arjun

Armoured Ambulance Tracked

BrahMos Launcher

Pinaka Multi Barrel Rocket
Launcher System

CBRN Recce Vehicle

SARVATRA Bridging System

Mobile Integrated Network
Terminal (MINT)

Radio Trunk System Mark II
(RTS Mark-II)

Flypast by Helicopters

मार्चिंग दस्ता

मैकेनाइज्ड इन्फैन्ट्री

बंगाल इंजीनियर ग्रुप एवं केन्द्र
सिख रेजिमेंटल केन्द्र : बैंड धुन 'शेर–ए–जवान'

मराठा लाइट इन्फैन्ट्री

डोगरा रेजिमेंट

सिख लाइट इन्फैन्ट्री रेजिमेंटल केन्द्र
डोगरा रेजिमेंटल केन्द्र : बैंड धुन 'अल्मोड़ा'

गढ़वाल राइफल्स

लद्दाख स्काउट्स

गढ़वाल राइफल्स रेजिमेंटल केन्द्र
कुमाऊं रेजिमेंटल केन्द्र : बैंड धुन 'विजय हिमालय'

58 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र
सेना ऑर्डनेंस कोर

लद्दाख स्कॉउट्स रेजिमेंटल केन्द्र
58 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र : बैंड धुन 'जनरल सुन्दर जी'

प्रादेशिक सेना (पंजाब)

नौसेना

नौसेना ब्रास बैंड
मार्च करती सैन्य टुकड़ी : बैंड धुन 'जय भारती'

झांकी (भारतीय नौसेना–राष्ट्रीय समृद्धि के लिए समुद्रवर्ती शक्ति)

वायुसेना

वायुसेना बैंड
मार्च करती सैन्य टुकड़ी : बैंड धुन 'स्पेस फ्लाइट'

वाहन दस्ता (भारतीय वायुसेना के नवीनतम अधिग्रहण का प्रदर्शन)

Marching Contingents

Mechanised Infantry

Bengal Engineer Group & Centre
Sikh Regimental Centre : Band playing *`Shere-e-Jawan'*

Maratha Light Infantry

Dogra Regiment

Sikh Light Infantry Regimental Centre
Dogra Regimental Centre : Band playing *`Almora'*

Garhwal Rifles

Ladakh Scouts

Garhwal Rifles Regimental Centre
Kumaon Regimental Centre : Band playing *`Vijay Himalaya'*

58 Gorkha Training Centre
Army Ordnance Corps

Ladakh Scouts Regimental Centre
58 Gorkha Training Centre : Band playing *`General Sunderji'*

Territorial Army (Punjab)

Navy

Naval Brass Band
Marching Contingent : Band playing *'Jai Bharti'*

Tableau (Indian Navy– Maritime Power for National Prosperity)

Air Force

Band Contingent
Marching Contingent : Band playing *'Space Flight'*

Vehicular Column- (Showcase the latest acquisitions of the IAF)

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन उपस्कर टुकड़ी

अग्नि–V मिसाइल
आर्म्ड एमफिबियस डोजर
वायुवाहित पूर्व चेतावनी एवं
नियंत्रण प्रणाली (ए ई डब्ल्यु एंड सी)
झांकी – नेवल सोनार्स

DRDO Equipment Columns

Agni -V Missile
Armoured Amphibious Dozer
Airborne Early Warning &
Control System (AEW&C)
Tableau - Naval Sonars

भूतपूर्व सैनिक

सेना सेवा कोर केन्द्र (उत्तर) तथा सेना ऑर्डनेंस कोर और स्कूल : बैंड धुन 'इन्फैन्ट्री'

भूतपूर्व सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी

Ex-Servicemen

Army Service Corps Centre (North) & Army Ordnance Corps Centre & School : Band playing *'Infantry'*

Ex-Servicemen Marching Contingent

अर्ध–सैनिक बल तथा अन्य सहायक सिविल बल

बैंडः सीमा सुरक्षा बल : बैंड धुन 'विजय भारत'
सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी

सीमा सुरक्षा बल ऊंटों की टुकड़ी
बैंडः सीमा सुरक्षा बल ऊंट : बैंड धुन 'हम हैं सीमा सुरक्षा बल'

असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी
बैंडः असम राइफल्स तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी : बैंड धुन 'असम राइफल्स गीत'

बैंडः केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी : बैंड धुन 'सेवा भक्ति का यह प्रतीक'

बैंडः भारत तिब्बत सीमा पुलिस
भारत तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी : बैंड धुन 'कदम–कदम बढ़ाए चल'

Para-Military And Other Auxiliary Civil Forces

Band: BSF : Band playing *'Vijay Bharat'*
BSF Marching Contingent

BSF Camel Contingent
Band: BSF Camel : Band playing *'Hum Hai Seema Suraksha Bal'*

Assam Rifles Marching Contingent
Band: Assam Rifles : Band playing *'Assam Rifles song'*
Coast Guard Marching Contingent

Band: CRPF : Band playing *'Seva Bhakti Ka Yeh Prateek'*
CRPF Marching Contingent

Band: ITBP : Band playing *'Kadam Kadam Baraye Chal'*
ITBP Marching Contingent

बैंडः	केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन 'सारे जहाँ से अच्छा'
बैंड :	सशस्त्र सीमा बल सशस्त्र सीमा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन 'जोश भरा है सीने में'
बैंडः	रेलवे सुरक्षा बल रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन 'विजय भारत'
बैंडः	दिल्ली पुलिस दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन 'दिल्ली पुलिस'

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एनसीसी)

बैंड :	राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्र छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन 'कदम–कदम बढ़ाए जा'
बैंड :	राष्ट्रीय कैडेट कोर की छात्राएं छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी	: बैंड धुन 'हम होंगे कामयाब'

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस)

सामूहिक पाइप और ड्रम बैंड	: बैंड धुन 'फूलों की घाटी'
राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी	

Band: CISF CISF Marching Contingent	: Band playing *'Saare Jahan Se Achchha'*
Band: SSB SSB Marching Contingent	: Band playing *'Josh Bhara Hai Sine Main'*
Band: RPF RPF Marching Contingent	: Band playing *'Vijay Bharat'*
Band: Delhi Police Delhi Police Marching Contingent	: Band playing *'Delhi Police'*

National Cadet Corps (NCC)

Band: Boys (NCC) Boys Marching Contingent	: Band playing *'Kadam Kadam Badhaye Ja'*
Band: Girls (NCC) Girls Marching Contingent	: Band playing *'Hum Honge Kamyab'*

National Service Scheme (NSS)

Massed Pipes & Drums Bands	: Band playing *'Phoolon Ki Ghati'*
National Service Scheme Marching Contingent	

सांस्कृतिक प्रस्तुति

झांकी : उन्नीस

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

बच्चों की प्रस्तुति

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम :

(I) पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता

(ii) केन्द्रीय विद्यालय, सादिक नगर, नई दिल्ली

(iii) एल. के. इंटरनेशनल स्कूल, बवाना, दिल्ली

(iv) राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, अमलवास, दिल्ली

मोटर साइकिलों पर करतब : सेना सेवा कोर 'टोरनेडोस'

विमानों द्वारा सलामी*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारतीय मौसम विज्ञान विभाग

*मौसम अनुकूल रहने पर ।

The Cultural Pageant

Tableaux : Nineteen

National Bravery Award Winning Children in open Jeeps

Children's Pageant

School Children Items :

(i) Eastern Zone Cultural Centre, Kolkata

(ii) Kendriya Vidyalaya, Sadiq Nagar, New Delhi

(iii) L.K. International School, Bawana, Delhi

(iv) Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Amalwas, Delhi

Motor Cycle Display : Army Service Corps 'TORNADOES'

FLY-PAST*

Release of Balloons: India Meteorological Department

* *If weather conditions permit.*

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 64वां गणतंत्र दिवस मना रहा है । यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत का प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है ।

रंग बिरंगी झांकियों का वर्ण–विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है । इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है ।

CULTURAL PAGEANT

Today, India celebrates its 64th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilisation, cultural diversity and progress; it symbolises both India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India, capturing both the beauty of our landscape and our architectural heritage.

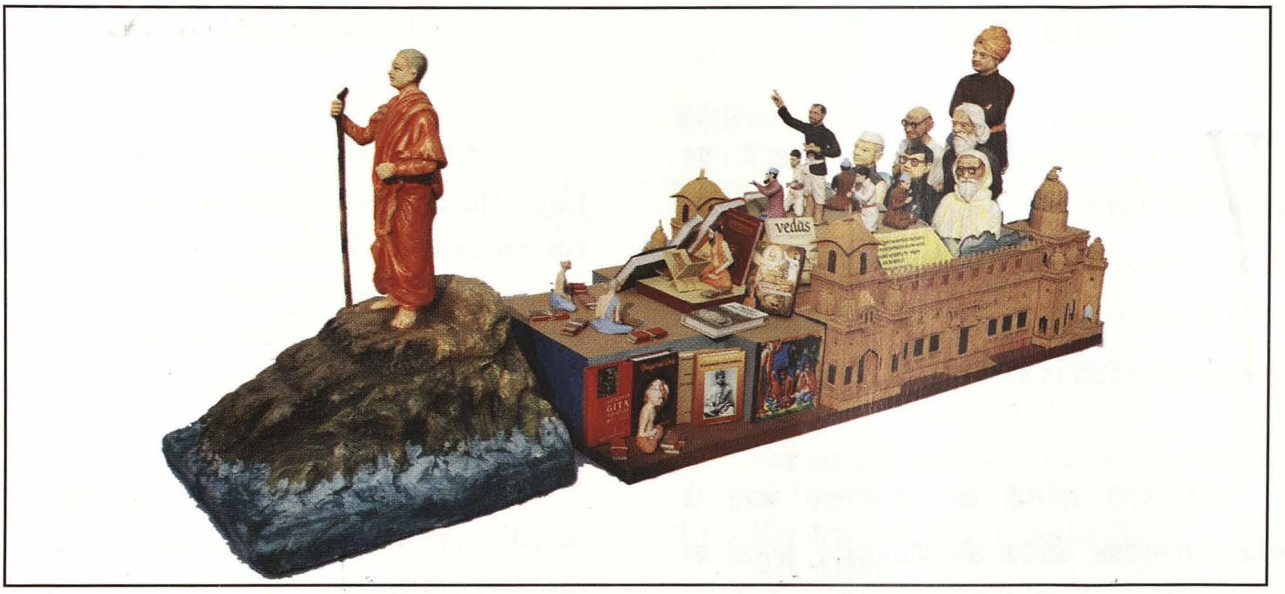

स्वामी विवेकानंद को नमन

यह झांकी भारत के अलौकिक विचारक देशभक्त संत स्वामी विवेकानंद की 150वीं जयंती पर पश्चिम बंगाल की विनम्र श्रद्धांजलि है।

कन्याकुमारी में एक साधारण कंबल, भिक्षा पात्र और दो पुस्तकें, भगवद्गीता एवं ईसा मसीह की अनुकृतियां थामे हुए एक भ्रमणशील साधु के रूप में स्वामीजी ने भारत परिक्रमा के दौरान जो कुछ भी देखा था कथित तौर पर उसकी सम्मिश्रित बानगी प्रस्तुत की है।

उपनिषदों एवं वेदों की पुनः व्याख्या करते हुए, स्वामीजी ने हमें यह अहसास कराया 'सत्य' एक है, परन्तु बुद्धिमान लोग इसे अलग–अलग नामों से पुकारते हैं'। इस झांकी में उन्हें, उनके गुरू रामकृष्ण परमहंस के साथ इस विचार का प्रचार करते हुए दर्शाया गया है। महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरु, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, विनोबा भावे पर उनके गहन प्रभाव को सांकेतिक रूप में प्रदर्शित किया गया है।

रामकृष्ण मिशन के माध्यम से, विवेकानंद ने वसुधैव कुटुम्बकम् के संदेश का प्रसार करते हुए एक वैश्विक संस्थान की स्थापना की थी। बेलूर मठ जो 1897 से शिक्षा, चिकित्सा एवं आपदा प्रबंधन में सेवा दे रहा है, इसकी अनुकरणीय सेवा का प्रतीक है।

–पश्चिम बंगाल

Obeisance to Swami Vivekananda

The tableau encapsulates West Bengal's humble commemoratory tribute on 150th birth anniversary of Swami Vivekananda, the ethereal thinker-patriot-saint of India.

As an itinerant monk carrying a coarse blanket, begging bowl and 2 books, Bhagvadgita and the Imitations of Christ, at Kanyakumari, Swamiji is said to have synthesized all he saw during Bharat Parikrama.

Reinterpreting Upanishads & Vedanta, Swamiji made us realize, "Truth is one but the wise call it by different names". Tableau depicts him propagating this idea with his Guru Ramkrishna Paramhansa. His endearing influence on Mahatama Gandhi, Jawaharlal Nehru, Netaji Subhash Chandra Bose, Vinoba Bhave is symbolically portrayed.

Through Ramakrishna Mission, Vivekananda established a global institution spreading the message of one human family. Belur Math here epitomizes the exemplary service it has been rendering since 1897 in education, medical & disaster management.

-WEST BENGAL

12

बृज की होली

बृजभूमि में मथुरा, वृंदावन, गोकुल, फालेन, नंदगाँव एवं बरसाना क्षेत्र शामिल हैं।

ट्रैक्टर पर प्रदर्शित झांकी सुप्रसिद्ध 'लट्ठमार होली' के दृश्य को दर्शाती है जिसमें बरसाना क्षेत्र की महिलाएं बृज भूमि के नंदगाँव क्षेत्र के 'गोपों' से बचाव करने का प्रयास कर रही हैं।

यह ट्रेलर रंगों की बौछार के साथ–साथ गाने और नाचने सहित विभिन्न रूपों में होली खेलते हुए बृजभूमि के पुरुषों और महिलाओं के उत्सवी मिजाज को दर्शाता है।

किनारे का पैनल भगवान कृष्ण और राधा के अमर प्रेम से जुड़े हुए इस प्रसन्नचित उत्सव के विभिन्न पौराणिक दृश्यों को प्रदर्शित करता है।

–उत्तर प्रदेश

Brij ki Holi

Brijbhoomi encompasses the region of Mathura, Vrindavan, Gokul, Phalen, Nandgaon and Barsana.

The tableau depicts in the tractor a scene from the famous 'latthmaar holi' where the women of Barasana area are trying to fend off the 'Gopes' of Nandgaon region of Brijbhoomi.

The trailer depicts the festive mood of the men and women of Brijbhoomi engaged in playing of Holi in different forms including singing and dancing coupled with sprinkling of colours.

The side panel shows different mythological scenes from this exuberant festival as associated with the immortal love of Lord Krishna and Radha.

-UTTAR PRADESH

हंड्रेड ड्रम्स वंगाला फेस्टीवल

वंगाला मेघालय के 'गारो' कबीलों का फसल के पश्चात् मनाया जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है। यह उत्सव भरपूर फसल के लिए उनके देवता 'मिसी सालजोंग' या महान दाता के प्रति आभार व्यक्त करने का उत्सव है।

वंगाला नृत्य 'दमा' (ड्रम्स) और रंग (घंटा), आदिल (सींग) एवं अन्य स्वदेशी उपकरणों की संगति के साथ बजाते हुए किया जाता है।

इस पृष्ठभूमि के साथ मेघालय की झांकी की रूपरेखा के अंदर ही पूरे 'हंड्रेड ड्रम्स फेस्टीवल' को प्रदर्शित करने की संकल्पना समाहित है। ड्रम बजाने वालों के साथ नृत्यों के समूह की अगुवाई करने वाले नेता की विशाल आकार की मूर्ति को ट्रैक्टर में दर्शाया गया है एवं समूचा ट्रैक्टर जीते जागते नर्तकों और उत्सव के ड्रमों से सुसज्जित लगभग सौ मूर्तिरूप में उत्कीर्ण नर्तकों से भरा हुआ है जो मिलकर ड्रमवादकों और नर्तकों के एक सम्पूर्ण समूह का अहसास कराता है। शोभायान के पृष्ठभाग में एक खड़े हुए ढोलकिया की विशाल मूर्ति आंखों का आकर्षण है।

– मेघालय

Hundred Drums Wangala Festival

The Wangala is the most significant post-harvest festival of the 'Garos' of Meghalaya. It is a thanksgiving ceremony to their God "*Misi Saljong*" or the Great Giver, for rich harvest.

The Wangala dance is performed to the beat of the '*Dama*' (drums) and with accompaniment of *Rang* (gongs), *Adil* (horns) and other indigenous instruments.

With this background the Meghalaya tableau is conceptualised to depict the entire 'Hundred Drums Festival' within the Tableau framework. In the Tractor is shown the sculpted oversized leader of the Group leading the dances with drum players and the entire tractor is filled with live dancers and near about hundred sculpted dancers with drums of the Festival coming together to give a visual feeling of the entire group of drummers and dancers. At the rear of the float a huge sculpted image of a standing drummer is projected as an eye-catcher.

-MEGHALAYA

किन्नालः एक अमर रंगीन हस्त कौशल

कर्नाटक अनेक कलाओं और हस्तकौशल विद्याओं की भूमि है और ऐसी ही एक जन्मजात हस्तकौशल है किन्नाल हस्तकौशल। यह कर्नाटक में किन्नाल गाँव में प्रचलित एक कोमल, समय लेने वाला और लकड़ी पर आधारित परंपरागत हस्तकौशल है।

यह हस्तकौशल, जानवरों, फलों और सागसब्जियों जैसे अन्य खिलौनों के अलावा मुख्यतः मंदिरों के लिए धार्मिक मूर्तियों और भित्ती–चित्र के लिए प्रयोग में लाया जाता है। किन्नाल हस्तकौशल का प्रयोग शिल्पकारों के ही परिवार जिन्हें चित्रगारों के रूप में जाना जाता है, द्वारा ही किया जाता है, जिनको प्रारंभ में विजयनगर के राजाओं द्वारा संरक्षित किया गया था।

झांकी के ट्रैक्टर भाग में, भारतीय पौराणिक परंपरा की गौ देवी कामधेनु को दर्शाया गया है। ट्रेलर भाग 'द्वारपालक' प्रहरी को दर्शाता है जो नाचती हुई गुड़िया के दोनों तरफ तैनात होने की मुद्रा में हैं। अंत में ग्राम देवता हैं जिनकी पूजा लोग इस विश्वास के साथ करते हैं कि ऐसा करने से उन्हें अच्छी फसल मिलेगी।

किन्नाल का यह अमर रंगीन हस्तकौशल कलाओं और हस्तकौशलों की भारत की समृद्ध विरासत के मूल्यों की शोभा बढ़ाता है और समूचे विश्व से कला प्रेमियों व पर्यटकों को आकर्षित करता है।

–कर्नाटक

Kinnal : An Immortal Colour Craft

Karnataka is home to numerous art and craft forms and one such native craft is Kinnal Craft. It is a delicate, time consuming and traditional wood based craft practiced in the Kinnal Village in Karnataka.

The craft is primarily used for religious idols and murals for temples apart from other toys like animals, fruits and vegetables. Kinnal craft is practiced only by a few families of craftsmen who are known as *'Chitragars,'* who were initially patronised by the Kings of Vijayanagar.

The tractor portion of the tableau shows Kamadhenu, the Goddess cow of Indian mythological tradition. The trailer portion displays 'Dwarapalaka' the guards who stand on either side next to the dancing doll. At the end is Grama Devata, which is worshipped as people believe that it brings them good harvest.

This immortal colour craft of Kinnal adds value to the Indian rich heritage of arts and crafts thereby attracting many art lovers and tourists from all over the world.

- KARNATAKA

पशमीना – परम्पराओं के साथ जुड़ी हुई प्रौद्योगिकी

जम्मू और कश्मीर समूचे–विश्व में अपनी अद्भुत प्राकृतिक सुन्दरता के लिए ही नहीं बल्कि पशमीना शाल सहित उत्कृष्ट हस्तशिल्प के लिए भी जाना जाता है।

पशमीना की गाथा राज्य के विभिन्न भागों को जोड़ने वाली रही है। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और विरासत का भी भाग रहा है। हाल ही में शेर–ए–कश्मीर, कृषि विज्ञान और प्रौद्योगिकी (एसकेयूएएसटी) विश्वविद्यालय कश्मीर के वैज्ञानिकों ने विश्व की पहली पशमीना बकरी (नूरी के नाम से) का क्लोन सफलतापूर्वक तैयार किया है जिससे उत्साहवर्धक अवसर पैदा हुए हैं जो परंपरा और प्रौद्योगिकी को आपस में जोड़ते हैं।

यह झांकी क्लोन रूप में तैयार की गई बकरी और पशमीना को तैयार करने की प्रक्रिया प्रदर्शित करती है।

–जम्मू एवं कश्मीर

Pashmina: Linking Traditions with Technology

Jammu and Kashmir is known world over not only for its breath-taking scenic beauty but also for its exquisite handicrafts including Pashmina Shawls.

The story of Pashmina connects different regions of the State. It has also been a part of the international trade and heritage. Recently Scientists of Sher-e-Kashmir University of Agricultural Sciences and Technology (SKUAST), Kashmir have successfully cloned the first Pashmina Goat of the world (named Noori) which has created exciting opportunities that combine tradition and technology.

The tableau depicts the cloned goat and pashmina making processes.

- JAMMU & KASHMIR

झारखंड की डोकरा कला

झारखंड की यह झांकी झारखंड की सुप्रसिद्ध डोकरा कला को प्रदर्शित करती है।

डोकरा कला सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक एवं प्राकृतिक जीवन शैली को बयां करती है। इस कला से जुड़ा हुआ कलाकार आसानी से धातु के ऊपर अपनी सामाजिक सांस्कृतिक चेतना और भावनाओं को उकेरता है। डोकरा कला के उत्पादों को पीतल और तांबे को धातु रूप में उपयोग करके लुप्त मोम की ढलाई तकनीक द्वारा तैयार किया जाता है।

ट्रैक्टर वाला भाग सुंदर हस्तकौशल जैसे हाथी, बिच्छु, हिरण, बैल इत्यादि को चित्रित करता है।

ट्रेलर वाला भाग बैलगाड़ी, कछुआ, नाव, मछली, हिरण एवं आदिवासी महिला की दैनिक दिनचर्या के बारे में जानकारी देता है। मंच के किनारे पर तैयार की गई डिजाइन घर को सजाने के लिए लोकप्रिय स्थानीय जादूपटिया कला को प्रदर्शित करती है।

–झारखंड

Dokra Art of Jharkhand

The Jharkhand tableau depicts the famous Dokra Art of Jharkhand.

Dokra art reflects the social, economic, religious and natural life style. An artist associated with this art simply embeds his socio-cultural consciousness and emotions on the metal. Dokra Art Products are created by lost wax casting technique using brass and copper as metal.

The tractor portion depicts the beautiful craft such as Elephant, Scorpion, Deer, Bull etc.

The trailer portion depicts Bullock Cart, Tortoise, Boat, Fish, Deer and the daily routine of a tribal woman. The design on the side of the platform displays the popular local Jadupatia art of decorating a house.

- JHARKHAND

किन्नौर जनजातीय जिले का शिल्प, वास्तुकला एवं लोक जीवन

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जनजातीय क्षेत्र का उल्लेख पौराणिक साहित्य में मिलता है और यहां भारत में अपने प्रकार की एक मात्र भाषा, भोजन करने संबंधी आदतें, परंपरागत वस्त्र व आभूषण पाए जाते हैं।

झांकी के अग्र भाग की अगुवाई रस्मी वस्त्र और आभूषण धारण किए हुए किन्नौरी बाला द्वारा की गई है। झांकी के मध्य में 'देवता का रथ' है जो सोने और चांदी में स्थानीय शिल्पकारों द्वारा तैयार किए गए मुखौटों के साथ अश्वदल देवता की पालकी है। देवता जीवन का ही अंग होते हैं और वे लोगों के सुख–दुःख में उनका साथ देते हैं।

झांकी के पृष्ठ भाग में परंपरागत किन्नौर मंदिर की प्रतिकृति है जो कि परंपरागत मंदिर की वास्तुकला का एक उदाहरण है।

–हिमाचल प्रदेश

Craft, Architecture and Folk Life of Tribal District of Kinnaur

Himachal Pradesh's Tribal area of Kinnaur, finds mention in Puranic literature and has unique language, food-habits, traditional dress and ornaments - one of its kind in India.

Front part of the tableau is lead by a Kinnauri girl sporting ceremonial dress and jewellery. The middle of the tableau has the "Rath of Devta" – the palanquin of the deity studded with masks made by local artisans in gold and silver. The Devtas (Gods) are part of life and they join people in their joys and sorrows.

The rear part of the tableau has the replica of traditional Kinnaur temple, which is an example of traditional temple architecture.

- HIMACHAL PRADESH

हाउस बोट

यह झांकी केरल की प्राकृतिक छवि का जीता–जागता लघु चित्रण है और यह केरल की एकल शयनकक्ष वाली हाउस बोट है जिसको अप्रवाही जल (बैक–वाटर) पोत विहार के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसकी दीवारों के पैनल काले रंग की पेंट वाली नाव के खूबसूरत तख्ते के प्लेटफार्म पर बांस और नारियल की लकड़ी से तैयार किए गए हैं। इसके अग्र भाग में खूबसूरती से सुसज्जित बैठने का स्थान है जिस पर बैठकर पर्यटक अप्रवाही जल की प्राकृतिक छटा का आनंद लेते हैं। इसका ऊपरी भाग केरल की बाल्कनी का प्रतिरूप है जो कि लकड़ी से तैयार सीढ़ी का प्रयोग करके बैठने के स्थान से जुड़ा हुआ है। इसकी छत बांस के डंडों और खजूर की पत्तियों से बनी हुई है। हाउस बोट के बाहरी भाग पर काजू के तेल की संरक्षक कवच का पेंट किया गया है।

हाउस बोट 'केट्टुवल्लम' का पुनः तैयार किया गया मॉडल है जो एक ऐसी नाव होती है जिसकी छत नारियल की जटा से बांधकर बांस की पट्टिकाओं से तैयार की जाती है। इसकी लंबाई लगभग 60 से 70 फीट (18 से 21 मीटर) होती है और मध्य में लगभग 15 फीट (4.6 मीटर) चौड़ी होती है। इसका ढांचा 'अंजिली' वृक्ष की लकड़ी के तख्तों से तैयार किया जाता है।

–केरल

House Boats

This tableau is a miniature of Kerala landscape and a single bedroom houseboat of Kerala that are used for back-water cruise. The wall panels are made of bamboo reed and coir on a finely planked platform of a black painted boat (coconut fiber rope). Front portion is a well furnished sit-out where tourists can sit and watch the scenic beauty of back waters. The upper portion is a Kerala model balcony which is connected to the sit out using a wooden ladder. The roof is made of bamboo poles and palm leaves. The exterior of the boat is painted with protective coats of cashew nut oil.

A houseboat is a reworked model of 'Kettuvallam', a boat with bamboo panel roof tied with coir. It is about 60 to 70 feet (18 to 21 m) long and about 15 feet (4.6 m) wide at the middle. The hull is made of wooden planks of **'Anjili'** tree.

-KERALA

सिरपुर– सांस्कृतिक संपन्नता और धार्मिक सहिष्णुता की भूमि

छत्तीसगढ़ की यह झांकी सिरपुर के प्राचीन अतीत को प्रदर्शित करती है जो कि सांस्कृतिक समृद्धि, वास्तुकला में निपुणता और धार्मिक सहिष्णुता से ओतप्रोत रहा है। राजा के महल से शिव और विष्णु के अनेकों मंदिरों तक, बुद्ध और जैन विहारों से सभी वर्गों के लिए बड़े–बड़े घरों तक, सिरपुर में खुदाई करके निकाले गए स्थानों की अंतहीन सूची है। प्रस्तुत झांकी के अग्र भाग में प्रसिद्ध लक्ष्मण मंदिर दिखाया गया है। झांकी के मध्य और पृष्ठ भाग में शिव, बुद्ध एवं जैन मंदिर प्रदर्शित किए गए हैं। 2000 ई. में शुरू किए गए वर्तमान उत्खननों से 17 शिव मंदिर परिसर, 8 बौद्ध विहार, 3 जैन विहार, एक विस्तीर्ण महल परिसर, एक सामंत–आवास, धर्माचार्यों के छह निवास और विश्व का सबसे बड़ा बाजार परिसर प्रकाश में आए हैं। उत्खनन करके निकाली गई ये सभी चीजें यह प्रदर्शित करती हैं कि हालांकि राजाओं ने बौद्ध धर्म नहीं अपनाया था, किन्तु वे मूर्तियों के धर्मानुष्ठान के लिए भूमि देने, बौद्ध प्रतिष्ठानों के रख–रखाव तथा अट्टालिकाओं की मरम्मत के प्रति उदार थे। सिरपुर की मूर्तिकलाएं अपनी विशिष्ट शांति व्यवस्था, निर्मलता तथा मानव जाति के लिए प्रेम के प्रदर्शन के साथ स्वयं में आकर्षण और शिक्षाप्रद व्याख्याएं समेटे हुए हैं। सिरपुर के अवशेष यह भी प्रदर्शित करते हैं कि यहां के निवासियों को एलियंस के बारे में जानकारी थी।

–छत्तीसगढ़

Sirpur – Land of cultural prosperity and religious tolerance

Tableau of Chhatisgarh depicts the ancient past of Sirpur which has been full of cultural prosperity, architectural expertise and religious tolerance. From King's palace to numerous Siva and Vishnu temples, Buddha and JainaViharas to large dwelling houses for all classes, Sirpur has an endless list of excavated sites. In the front side of tableau the famous Laxman temple is shown. In the mid and back side of tableau Shiva, Buddha and Jain temples have been displayed. The present excavations which began in 2000 A.D. have so far brought to light, 17 Siva temple complexes, 8 Buddha Viharas, 3 Jain Viharas, a sprawling palace complex, a chieftain's residence, six residences of priests and world's biggest market complex. All these excavated items indicates that even though the kings did not profess Buddhism, they were generous in granting lands for ceremonial worship of the images, maintenance of Buddhist establishment and repair to the edifices. The sculptures of Sirpur hold a charming and instructive explanation with their exclusive operation of peace, serenity and love for human beings. The remains of Sirpur also indicate that the residents had knowledge about aliens.

- CHHATTISGARH

भगवान जगन्नाथ की चंदन यात्रा

ओडिशा राज्य की झांकी भगवान जगन्नाथ की चंदन यात्रा पर आधारित है। यहां पर उत्सव के दौरान चंदन के लेप से देवताओं की पूजा अर्चना की जाती है। यह चंदन यात्रा (चंदन की लकड़ी का उत्सव) 21 दिनों तक चलती है और इस पवित्र उत्सव का प्रारंभ वार्षिक कार उत्सव के लिए रथों के निर्माण के प्रारंभ का दिन भी होता है।

प्रतिदिन मदन मोहन (भगवान जगन्नाथ के अनुयायी) के साथ देवताओं के अनुयायियों को प्रसिद्ध नरेंद्र टेंक (चंदन पोखरी) तक एक शोभायात्रा के रूप में लाया जाता है। दो खूबसूरती से अलंकृत नावों में सभी देवता सायं के पोत विहार का आनंद लेते हैं। नाव में चंदन के लेप सहित भिन्न–भिन्न प्रकार की पूजा अर्चना की जाती है। इस दृश्य को ट्रेलर में बखूबी से प्रदर्शित किया गया है।

चंदन यात्रा का जुलूस विमानों में देवताओं के स्त्रोत्गान, भजन, कीर्तन, मृदंगों, घंटाध्वनि इत्यादि के बीच लायन गेट से आरंभ होकर नरेंद्र टैंक तक जाता है। इस दृश्य को ट्रैक्टर में दर्शाया गया है। पूरी यात्रा के दौरान जमीन पर जुलूस के साथ संगीत और नृत्य प्रदर्शित किया गया है।

–ओडिशा

Chandan Yatra of Lord Jagannath

The Tableau of Odisha State is based on Chandan Yatra of Lord Jagannath. Deities are worshipped with sandal wood paste during the festival. Chandan Yatra (sandal wood festival) lasts for 21 days and beginning of this auspicious festival also marks the day of beginning of construction of Raths (Chariots) for annual Car Festival.

Every day the representatives of deities accompanying Madan Mohan (representative of Lord Jagannath) are taken in a procession to famous Narendra Tank (Chandan Pokhri). In two gorgeously decorated boats, all deities are enjoying the evening cruise. Various types of worships including the sandal-wood paste are performed on the boat. This performance has been depicted in the trailor.

The procession of Chandan Yatra starts from Lion's Gate to Narendra tank amid Hymn, Bhajan, Kirtan, Mridanga, Ghanta etc. with deities in bimans. This has been shown on the tractor. On ground, music and dance performance accompany the procession throughout the journey.

- ODISHA

बूंदी की चित्रशाला

बूंदी की चित्रशाला राजस्थान के हडौती क्षेत्र में बूंदी के किले में स्थित है। बूंदी विशेषतः 'बूंदी शैली' की लघुचित्र कला की विशेष शैली और सौन्दर्यपरक वास्तु शैली के लिए प्रसिद्ध है।

चित्रशाला को भित्तिचित्रों सहित एक चित्ताकर्षक मंडप के रूप में दर्शाया गया है जिसमें लघु चित्रकला की बूंदी शैली की प्रसिद्ध परंपरागत कला को प्रदर्शित किया गया है। दीवारों पर बने इन भित्तिचित्रों में रागमाला, बारामासा तथा राधा और कृष्ण के जीवन से संबंधित महाकाव्य, रासलीला के दृश्यों को दर्शाया गया है। पीली पक्की मिट्टी का पुट लिए हुए सफेद रंग पर जीवन्त नीला, हरा और फीरोजी रंग एक अभिभूत करने वाला दृश्य प्रस्तुत करता है। अपनी रंग योजना के लिए प्रसिद्ध चित्रकला की बूंदी शैली चित्रशाला में सर्वत्र एक जीवन्तता उत्पन्न करती है।

चित्रशाला जो कि उम्मेद महल के रूप में भी प्रसिद्ध है, गढ़ महल का एक भाग है। चित्रशाला का निर्माण 18वीं शताब्दी में किया गया था और यह बगीचे के प्रांगण के ऊपर एक उन्नत मंच पर कई कक्षों के रूप में स्थित है। चित्रशाला की दीवारों और छतों का रागमाला अथवा रासलीला की कथाओं का प्रदर्शन करने वाली सुन्दर चित्रकलाओं से अलंकरण किया गया है ।

–राजस्थान

Chitarashala of Bundi

Chitrashala of Bundi is situated in the Fort of Bundi in the Hadoti region of Rajasthan. Bundi is especially famous for the special style of miniature paintings from the "Bundi School" and the aesthetic architecture.

Chitrashala is shown as a fascinating pavilion with frescoes displaying the famous traditional art of Bundi School of miniature paintings. These fresco paintings on the walls depict scenes from the Ragmala, Baramasa and Raaslila, the epic story from the life of Radha and Krishna. The vibrant blue, green and turquoise on white with touches of terracotta yellow lend an arresting view. The Bundi style of painting famous for its Rang Yojna infuses life in every bit and corner of Chitrashala.

The Chitrashala, which is also known as the Ummed Mahal, is a part of the Garh Palace. The Chitrashala was built in the 18th century, and forms a set of rooms on an elevated podium above the garden courtyard. The walls and ceilings of the Chitrashala are adorned with beautiful paintings like those depicting the stories of Ragmala or Raaslila.

-RAJASTHAN

22

त्रिपुरा के मोग समुदाय का सांगरई उत्सव

'मोग' एक अनुनादी जातीय समुदाय है जो त्रिपुरा राज्य के निवासी हैं।

मोग बौद्ध धर्म के अनुयायी हैं। वे अत्यधिक भव्यता के साथ विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों और उत्सवों को मनाते हैं।

झांकी के ट्रैक्टर वाले हिस्से में 'सांगरई उत्सव' के एक भाग को प्रदर्शित किया गया है जहां मोग स्त्रियों को विभिन्न रंगों और आकारों की छतरियों और पंखों को लहराते हुए रंग–बिरंगी वेशभूषा में दिखाया गया है।

ट्रेलर इस उत्सव के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डालता है। ट्रेलर के अंतिम भाग में सुप्रसिद्ध महामुनि पगोडा–मोग समुदाय के बौद्ध विहार का चित्रण किया गया है। किनारे का पैनल त्रिपुरा में मोग जातीय समुदाय के आवासों के निकट स्थित पुरातत्व आकर्षण का स्थान पिलाक से भिन्न–भिन्न पत्थरों पर किए गए विशिष्ट कार्यों को प्रदर्शित करता है।

मोग सांस्कृतिक रूप से अपने आप में एक अत्यन्त अनुनादी समुदाय है। 'सांगरई' उत्सव नव वर्ष की पूर्व संध्या पर प्रदर्शित किए गए अत्यन्त रंगारंग और अनुनादी नृत्य की प्रस्तुति है। इस नृत्य में छाते का प्रयोग अपने आप में एक अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो मोग समाज में अच्छाई के पवित्र संकेत की ओर इंगित करता है।

–त्रिपुरा

Sangrai Festival of the Mog Community of Tripura

'Mogs' are one of the vibrant ethnic communities inhabiting the State of Tripura.

The Mogs are followers of Buddhism. They perform various rituals and festivals with great grandeur.

The tractor portion of the tableau depicts a part of the 'Sangrai Festival' where Mog females are shown in colourful dress waving Umbrellas and Fans of different colours and shapes.

Trailer depicts the various parts of the Festival. At the end of the Trailer is shown the famous Mahamuni Pagoda- a Buddhist Shrine of the Mog community. The side panel showcases the different stone works from Pilak, a place of archaeological attraction in Tripura located near the residing place of the Mog ethnic community.

The Mogs are culturally a very vibrant community. "Sangrai" Festival presents one of the most colourful and vibrant dances performed on the eve of New Year. The use of the umbrella is very prominent in the dance which symbolizes a holy sign of goodness among the Mog Society.

-TRIPURA

बिहार का सिक्की घास हस्तशिल्प

बिहार राज्य प्राकृतिक सिक्की घास उत्पादन करने के क्षेत्र के रूप में सुप्रसिद्ध है। सिक्की घास खूबसूरत सुनहरी शेड के साथ अपनी लंबाई और चमक के कारण आकर्षण का केंद्र है जो प्रत्येक वर्षा ऋतु के पश्चात केवल एक बार पैदा होती है और इसके काटे गए टुकड़ों को वर्षभर उपयोगार्थ संरक्षित कर रखा जाता है। बिहार की महिलाओं द्वारा सिक्की घास से तैयार हस्त कार्य मनमोहक लगते हैं।

इस झांकी का अग्र भाग जो षणभुजाकार रूप में प्लेटफार्म अत्यंत सुंदर बहुरंगी सूखी हुई सिक्की घास से तैयार 'कलश' को लिए है। सिक्की घास से तैयार बहुहरित पत्तियां जिनसे कलश का ऊपरी भाग ढका हुआ है, वह पवित्र सिक्की से तैयार नारियल को लिए हुए है।

झांकी का ट्रेलर भाग सुंदर–सुंदर उत्पादों जैसे टोकरियों, जानवरों, पक्षियों, गुड़ियों, खिलौनों एवं अन्य विभिन्न प्रकार के सजावटी वस्तुओं को कलात्मक रूप में चित्रित करता है। ट्रेलर के मध्य भाग में महिलाएं सिक्की घास को एकत्रित करती हुई, इसे रंगती हुई और इसकी सहायता से विभिन्न उत्पादों को तैयार करती हुई नजर आती हैं।

–बिहार

Sikki Grass Craft of Bihar

Bihar is famous for its natural Sikki grass producing region. Sikki grass is very attractive for its height and shine with a lovely golden shade which is grown only once after every rainy season and cut pieces are stored for use throughout the year. The handicrafts of Sikki grass made by women of Bihar are very beautiful.

The front side hexagonal shaped platform of tableau is carrying "KALASH" made of beautiful multi colour dyed Sikki grass. The multiple green leaves made by Sikki grass covering the upper portion of "KALASH" carry auspicious Sikki made coconut.

The trailer portion of the tableau artistically displays beautiful products such as baskets, animals, birds, dolls, toys and other various decorative items. In the middle portion of the trailer, women engage in collecting, dyeing and making various products.

-BIHAR

24

देश का सांस्कृतिक केंद्र

दिल्ली की झांकी में राजधानी को देश के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में दर्शाया गया है जहां अभिनय कलाओं तथा ललित कलाओं का संगम कई चिरस्मरणीय कार्यक्रमों के रूप में सामने आया है।

ट्रैक्टर वाले हिस्से में एक कत्थक नर्तक के आदमकद से बड़ी प्रतिमा के साथ मुद्रा युक्त एक नृत्य विधा का सांकेतिक प्रदर्शन प्रस्तुत किया गया है। किनारों के साथ–साथ पारंपरिक तथा आधुनिक संगीत वाद्ययंत्रों का मिश्रण दर्शाया गया है जो संगीत तथा नृत्य के बीच घनिष्ठ संबंध को प्रदर्शित करता है। गौरेया हाल ही में जिनकी संख्या धीरे–धीरे कम होती जा रही है, को राज्य पक्षी घोषित किया गया है, इनके संरक्षण पर सरकार ध्यान केंद्रित कर रही है और इसी को ध्यान में रखते हुए ट्रैक्टर वाले हिस्से पर इसे प्रमुखता से दर्शाया गया है। पेंट ब्रश बहुविध रंगों तथा कला एवं सांस्कृतिक विभाग द्वारा शहर में ललित कला को प्रोत्साहन दिए जाने के महत्व को दर्शाता है।

ट्रेलर वाले हिस्से का निर्माण सांस्कृतिक विविधता की विषयवस्तु पर किया गया है, जिसमें एक पोप बैंड है जो समकालिक प्रवृत्तियों को प्रदर्शित करता है। इसके अलावा इस भाग में थियेटर, कठपुतली कला को दर्शाने वाली आदमकद से बड़ी तस्वीरें और साइड स्क्रीनों में दिल्ली सरकार द्वारा समय–समय पर आयोजित किए जाने वाले विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों वाले एक समुचित चित्र की कलात्मक झलक दिखाई गई है।

झांकी के पृष्ठ भाग में पुराना किला, जो राजधानी में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का केंद्र बन गया है, की पृष्ठभूमि में सूफी संगीत को दर्शाया गया है जो हाल ही में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ है।

–दिल्ली

The Cultural Hub of the Country

The tableau for Delhi seeks to project the capital as the cultural hub of the country, where performing arts and fine arts come together as red letter events.

The tractor portion presents a symbolic representation of a dance form with Mudra, with a larger than life image of a Kathak dancer. Along the sides are presented an amalgamation of traditional and modern musical instruments, which highlight the close relationship between music and dance. The house sparrow, which has been dwindling in population in recent times, has been declared as the State Bird, and finds its place of pride in the tractor portion, in tandem with the government's focus on its protection. The paint brush signifies multi-farious hues and the encouragement to fine arts that the Department of Art and Culture lends to the city.

The trailor portion builds on the theme of the cultural diversity, with a pop band presented to show the contemporary trends. The story unfolds further with theatre, larger than life figures representing Puppet Art, and the side screens with artistic presentation of a collage of various cultural events organised by the Delhi Government from time to time.

The rear end seeks to present Sufi music that has grown in popularity tremendously in recent times, against the backdrop of Old Fort, which has become a hub of cultural events in the capital.

-DELHI

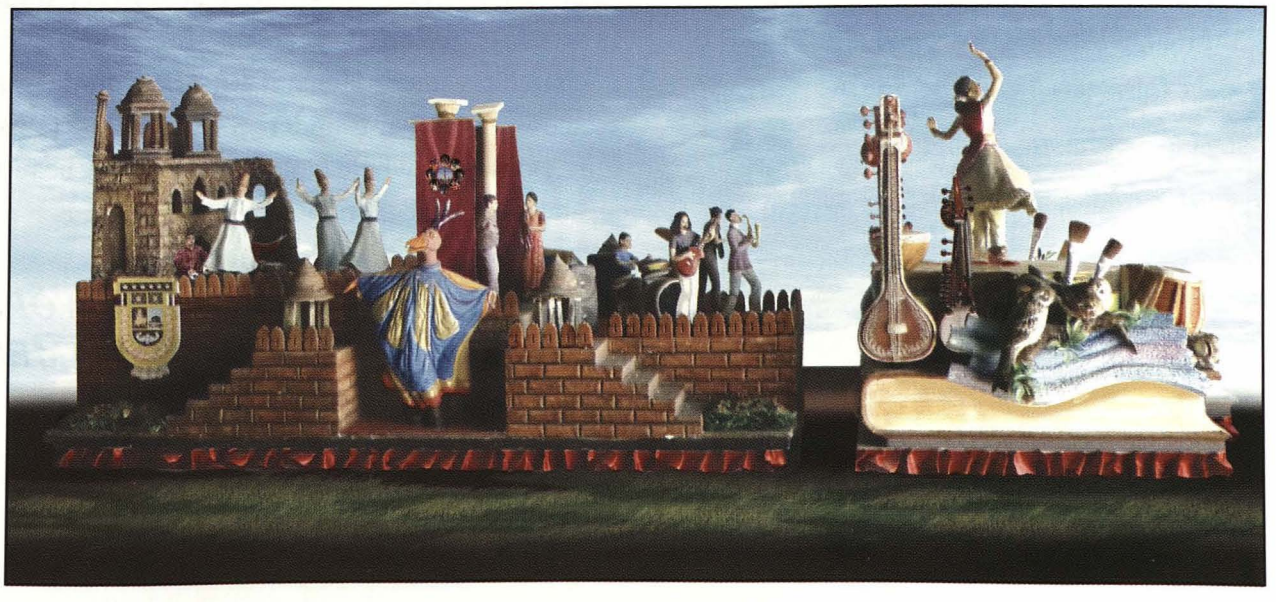

ऋतुएं

केंद्रीय लोक निर्माण विभाग की फूलों से तैयार की गई झांकी ऋतु चक्र को प्रदर्शित कर रही है। झांकी का अग्र भाग वसंत ऋतु को चित्रित करता है जिसे नृत्य करते हुए बाल और बाला के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। ट्रेलर का अग्र भाग ग्रीष्म ऋतु को दर्शाता है। ट्रेलर का मध्य भाग वर्षा ऋतु को चित्रित करता है जिसे नृत्य करते मयूर और झरने के जरिए बखूबी प्रदर्शित किया गया है। इसके बाद शरद ऋतु के रूप में पतझड़ी वृक्ष दिखाया गया है। हेमन्त ऋतु (शीत पूर्व) के अंतर्गत सजीव पात्रों द्वारा बोन फायर का चित्रण है और शिशिर ऋतु (शीतकाल) के लिए बर्फ से आच्छादित पर्वत का का दृश्य दर्शाया गया है। समूची झांकी को खूबसूरत और जीवन्त रंगारंग व तरोताजा फूलों से तैयार किया गया है।

–केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Seasons

C.P.W.D., flower tableau is depicting the cycle of seasons (Ritus). Front portion of the tableau displays Vasant Ritu (Spring season), shown by dancing boy and girl. The front part of the trailor is showing Grishma Ritu (Summer season). Middle part of the trailor is showing Varsha Ritu (Monsoon season), depicted with dancing peacock and waterfall. After that a deciduous tree is shown in Sharad Ritu (Autumn season), followed by bon fire by the live characters under Hemant Ritu (Pre-winter), and snowy mountain under Shishir Ritu (Winter season). The whole tableau is crafted by beautiful and vibrant colourful fresh flowers.

- CENTRAL PUBLIC WORKS DEPARTMENT

जनजातीय कला

जनजातीय कार्य मंत्रालय की झांकी में विभिन्न जनजातियों द्वारा अनेकों कला स्वरूपों के जरिए जनजातीय कला को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है, जिसमें जनजातियों के सामाजिक–आर्थिक विकास पर जोर दिया गया है।

ट्रैक्टर के ऊपरी हिस्से में ओडिसा की एक जनजातीय महिला, जो सौरा पेंटिंग का कार्य कर रही है, का आदमकद से भी बड़ा आकार चित्रित किया गया है। निचले हिस्से में सौरा पेंटिंग को चित्रित किया गया है, जो सौरा कला की विषयवस्तु की परिपूरक है।

ट्रेलर पर वरली जनजाति का एक व्यक्ति तथा उसकी पुत्री परंपरागत वस्त्रों में एक झोपड़ी के दरवाजे पर बैठे हैं, जिसे वरली चित्रों से अलंकृत किया गया है।

बीच वाले हिस्से में विभिन्न जनजातियों की डोकरा कला तथा टेराकोटा पर कार्य करती हुई महिलाओं को दिखाया गया है। किनारों वाले पैनलों में राजस्थान की महिलाओं को आजीविका के लिए परम्परागत कढ़ाई कला करते हुए दर्शाया गया है।

पृष्ठ भाग में, छत्तीसगढ़ की एक आदमकद से भी बड़ी जनजातीय महिला कांसे की टोकरी लिए हुए है, जो परम्परागत विभिन्न रंगों के वस्त्र में शोभायमान है। यह संपूर्ण झांकी जनजातीय लोगों की रंग–बिरंगी कला तथा परम्पराओं का शानदार मिश्रण है, जो निश्चित तौर पर दर्शकों का मन मोह लेगा।

–जनजातीय कार्य मंत्रालय

Tribal Art

The tableau from the Ministry of Tribal Affairs seeks to portray the Tribal Art through various art forms by different tribes emphasizing on the socio-economic development of the tribals.

The upper tractor portion depicts a larger than life image of a tribal woman from Odisha working on a Saura Painting. The lower portion depicts saura paintings, complementing the theme of Saura Art.

On the trailer a man and his daughter from the Warli tribes in their traditional dress, are sitting at the door of a hut creatively made and decorated with Warli paintings adorned.

The middle portion highlights the women working on Dokra Art and terracotta from different tribes. On the side panels, women from Rajasthan are shown engaged in traditional embroidery work for livelihood.

At the rear end, a larger than life figure of a tribal woman from Chhattisgarh holding a bell metal basket looks enchanting in the traditional colourful dress. The whole tableau is a splendid amalgam of the colourful art and traditions of the tribal people which will surely capture the attention of the spectators.

- MINISTRY OF TRIBAL AFFAIRS

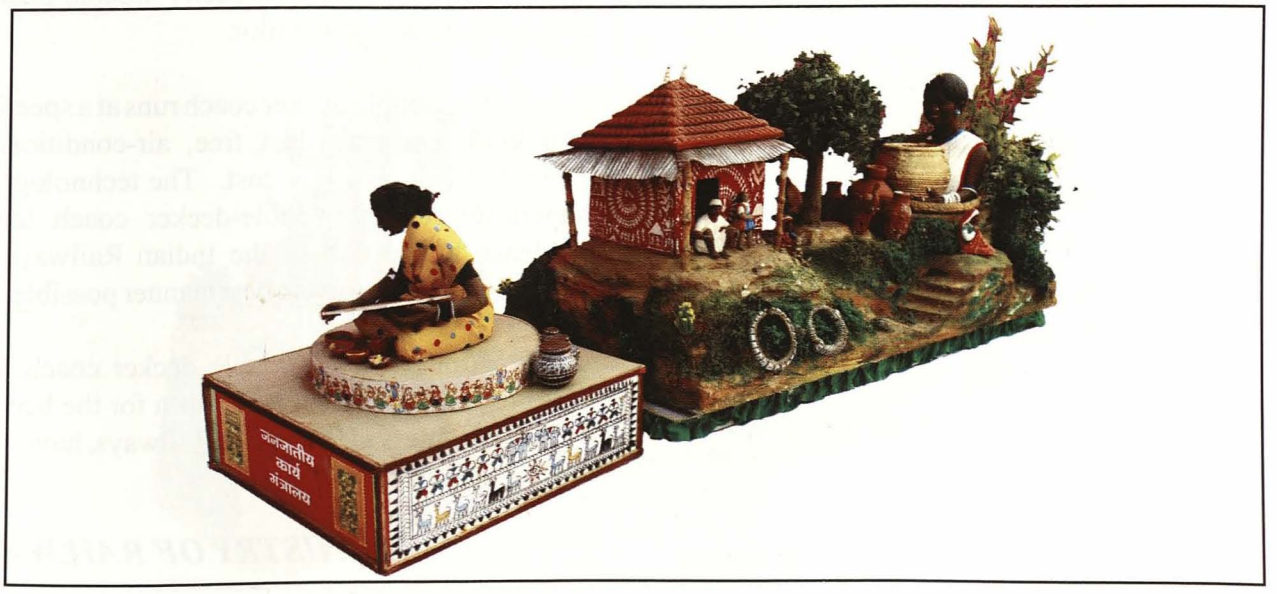

वातानुकूलित डबल डेकर ट्रेन

भारतीय रेलवे ने अपनी झांकी 'प्रति कोच अधिक कोच' की रूपरेखा के साथ पेश की है। यह भारतीय रेलवे का एक स्वदेशी प्रयास है। इस प्रयास से इंटरसिटी ट्रेन की वाहन क्षमता में 50% से अधिक की वृद्धि होती है।

इस झांकी के दो भाग हैं, जिसमें बिजली चालित इंजन, डब्ल्यु ए पी 7, एक उच्च अश्वशक्ति इलेक्ट्रिक यात्री रेल इंजन ट्रैक्टर पर रखा गया है और अत्यधिक क्षमता वाले डबल डेकर कोच को ट्रेलर पर रखा गया है।

डबल डेकर कोच कम किराए के साथ धूल मुक्त, वातानुकूलित, इंटरसिटी यात्रा को सुनिश्चित करते हुए 160 कि.मी. प्रति घंटा की गति से दौड़ती है। डबल डेकर कोच की प्रौद्योगिकीय उत्कृष्टता प्रत्येक संभव रूप में अपने ग्राहकों को सेवा प्रदान करने की भारतीय रेल की इच्छा शक्ति को बल प्रदान करती है।

डबल डेकर कोच के किनारों पर भारतीय रेलवे के अपने ग्राहकों के लाभ के लिए प्लेटफार्म पर उपलब्ध सुख–सुविधाओं को भी प्रदर्शित किया गया है।

–रेल मंत्रालय

Air Conditioned Double Decker Train

"More coach per coach" is the theme being presented by Indian Railways in their tableau. This is an indigenous effort of the Indian Railways, which increases the carrying capacity of an intercity train by more than 50%.

The two-part tableau consists of an electric engine, the WAP 7, a high horse power electric passenger locomotive, placed upon the tractor and the higher capacity double-decker coach placed upon the trailor.

The double decker coach runs at a speed of 160 km/h ensuring dust free, air-conditioned, intercity travel at a low cost. The technological superiority of the double-decker coach lends credence to the will of the Indian Railways to serve its customers in the best manner possible.

Alongside the double decker coach, the amenities, available on a platform for the benefit of the customers of the Indian Railways, have also been showcased.

- MINISTRY OF RAILWAYS

विकलांग व्यक्तियों का समावेशन, सुलभता एवं सशक्तिकरण

सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय की यह झांकी विकलांग व्यक्तियों का राष्ट्र के समान नागरिकों के रूप में चित्रण करती है जिन्हें एक समावेशी समाज में सभी मौलिक अधिकार और स्वतंत्रता हासिल हो। इससे यह संदेश भी मिलता है कि विकलांग व्यक्तियों की भी जरूरतें अन्य नागरिकों की तरह ही है। इन्हें स्वास्थ्य, शिक्षा, खेलकूद, मनोरंजन, धर्म, वित्तीय सेवाएं जैसे विभिन्न क्षेत्रों के संकेतों द्वारा धूमती हुई रूबीक क्यूब पर बखूबी प्रस्तुत किया गया है। 2001 की जनगणना के अनुसार, 2.13% जनसंख्या विकलांग व्यक्तियों की है।

प्रस्तुत झांकी समावेशन, सुलभता एवं सशक्तिकरण का सजीव चित्रण है। सामान्य व्यक्तियों के साथ विकलांग व्यक्तियों की सहभागिता समावेशन का परिचायक है। सुलभ संचार को ब्रेल और संकेत भाषा में समानता, भाईचारा, न्याय तथा स्वतंत्रता जैसे शब्दों के साथ दर्शाया गया है। शारीरिक सुलभता को एक रैम्प के प्रतीक द्वारा दर्शाया गया है जो व्हील चेयर प्रयोगकर्ताओं के लिए सचलता को सुविधाजनक बनाता है। विकलांग व्यक्तियों की समान नागरिकता को भिन्न–भिन्न प्रकार के पहचान पत्रों के साथ एक महिला द्वारा प्रस्तुत किया गया है। सशक्तिकरण को सांकेतिक रूप में उपर्युक्त सभी दृश्यों के जरिए प्रस्तुत किया गया है और इसे राष्ट्रीय ध्वज के साथ विकलांग व्यक्तियों और अन्य व्यक्तियों के एक दूसरे का हाथ थामे हुए और आगे बढ़ने के दृश्य में मूर्त रूप दिया गया है।

–सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय

Inclusion, Accessibility and Empowerment of Persons with Disabilities

The tableau of the Ministry of Social Justice and Empowerment, portrays persons with disabilities as equal citizens of the nation enjoying all fundamental rights and freedoms in an inclusive society. It also carries the message that the needs of the persons with disabilities are the same as other citizens; portrayed by the symbols of various sectors like health, education, sports, recreation, religion, financial services on a revolving Rubik's Cube. According to Census 2001, 2.13% of the population consists of persons with disabilities.

The tableau showcases Inclusion, Accessibility and Empowerment. Participation of persons with disabilities with non disabled citizens depicts inclusion. Accessible communication is depicted with the words "Equality", "Fraternity", "Justice" and "Liberty" in Braille and Sign Language. Physical accessibility is symbolised by a Ramp which facilitates mobility for wheel chair users. Equal citizenship of people with disabilities is represented by a woman holding different Identity Cards. Empowerment is symbolically represented through all the above depictions and concretized in the sculpture of persons with disabilities and others holding each other and moving forward, with the National Flag.

- MINISTRY OF SOCIAL JUSTICE & EMPOWERMENT

सिनेमा मयूर पंखी

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की झांकी का केंद्र बिन्दु सिनेमा मयूर पंखी है जो कि पौराणिक बर्डबोट की एक सांकेतिक प्रस्तुति है। यह झांकी भारतीय सिनेमा विराट सेलुलायड पंखों के साथ राष्ट्र की सामूहिक कल्पना के वाहक के रूप में प्रस्तुत कर रही है। यह झांकी यह बताती है कि किस तरह से फिल्म के क्षेत्र में, लम्बे समय से निर्देशकों की दूरदर्शिता ने राष्ट्र की कल्पना शक्ति को गति प्रदान की है।

डेक को दो भागों में बांटा गया है जिनमें से एक प्रेम का और दूसरा आशा का प्रतीक है। पहले भाग में 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' से विस्तृत सरसों के खेत में नृत्य करते हुए युगल हैं जिसमें मुख्य धारा सिनेमा के 'आदर्शवादी प्रेम' का चित्रण है जिसमें प्रेम सभी पर विजय प्राप्त कर लेता है। झांकी का दूसरा भाग भारतीय सिनेमा (पाथेर पंचाली और मदर इंडिया) से दो प्रतीकात्मक दृश्य के माध्यम से 'संघर्ष के बीच आशा' को चित्रित करने की समानांतर सिनेमा की तलाश को सांकेतिक रूप में प्रदर्शित करता है।

प्रस्तुत झांकी के अनुभाग में फिल्म शूट करने की शुरूआत के भारतीय तरीके के मुहूरत शॉट को प्रदर्शित किया गया है।

इस झांकी में मयूर सुंदरता और कल्पना–प्रवाह का प्रतीक है। सिल्वर कलर, सिल्वर स्क्रीन का प्रतीक है जिसमें महत्वपूर्ण भारतीय फिल्मों के नाम उकेरे गए हैं।

'मदर इंडिया' और 'पाथेर पांचाली' शिष्टाचार कॉपीराइट का मालिकाना अधिकार महबूब प्रोडक्शन प्राइवेट लिमिटेड मुंबई और प. बंगाल फिल्म विकास निगम लिमिटेड कोलकाता क्रमशः से प्राप्त किया।

–सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

Cinema Mayur Pankhi

The central idea of the Ministry of Information & Broadcasting's tableau is Cinema Mayur Pankhi – a symbolic representation of the mythological birdboat. It represents Indian Cinema as a carrier of a nation's collective imagination with gigantic celluloid sails suggesting how the vision of directors through the ages, harnessed on film, has propelled the nation's imagination forward.

The deck is divided in two parts – representing love and hope. The first has the ubiquitous mustard fields with dancing duo from 'Dilwale Dulhaniya Le Jayenge' – symbolizing mainstream cinema's depiction of 'utopian love' that conquers all opposition. The second part symbolizes parallel cinema's quest to portray 'hope amidst strife' – through two iconic scenes from Indian Cinema (Pather Panchali and Mother India).

The Tableau is lead by the traditional Indian way of beginning a film shoot- the Muhurat shot.

The Peacock stands for beauty and fantasy. The silver colour is symbolic of the silver screen, with names of landmark Indian Movies embedded on it.

Clip from "Mother India" & "Pather Panchali" courtesy copyright owner, Mehboob Production Pvt. Ltd. Mumbai & West Bengal Film Dev. Corp. Ltd. Kolkata respectively.

-MINISTRY OF INFORMATION & BROADCASTING

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2012 के विजेता

नाम	राज्य
मास्टर तरंग अतुलभाई मिस्त्री @	गुजरात
कुमारी रेणु*	नई दिल्ली
मास्टर गजेन्द्र राम**	छत्तीसगढ़
मास्टर विजय कुमार सैनी***	उत्तर प्रदेश
कुमारी आकांक्षा गाउटे (सिम्मी)***	छत्तीसगढ़
कुमारी हली रघुनाथ बरफ***	महाराष्ट्र
मास्टर देवांश तिवारी	छत्तीसगढ़
मास्टर लालरिनलुआ	मिजोरम
मास्टर ई. सुगन्थन	तमिलनाडु
मास्टर रमिथ के.	केरल
स्व. मास्टर रामदीनथारा	मिजोरम
मास्टर मेबिन साइरियक	केरल
मास्टर कोरौंगंबा कुमाम	मणिपुर
मास्टर समीप अनिल पंडित	महाराष्ट्र
मास्टर मुकेश निशाद	छत्तीसगढ़
मास्टर विश्वेन्द्र लोकना	उत्तर प्रदेश
मास्टर सतेन्द्र लोकना	उत्तर प्रदेश
मास्टर विष्णु एम. वी.	केरल
मास्टर स्ट्रीप्लीजमैन माइलियम	मेघालय
मास्टर पवन कुमार कनौजिया	उत्तर प्रदेश
सपना कुमारी मीणा	राजस्थान
मास्टर सुहैल के. एम.	कर्नाटक

@ भारत पुरस्कार

* गीता चोपड़ा पुरस्कार

** संजय चोपड़ा पुरस्कार

*** बापू गायधानी पुरस्कार

Winners of the National Bravery Award - 2012

Name	State
Master Tarang Atulbhai Mistry @	Gujarat
Km. Renu*	New Delhi
Master Gajendra Ram**	Chhattisgarh
Master Vijay Kumar Saini***	Uttar Pradesh
Km. Akanksha Gaute (Simmy)***	Chhattisgarh
Km. Hali Raghunath Baraf***	Maharashtra
Master Devansh Tiwari	Chhattisgarh
Master Lalrinhlua	Mizoram
Master E. Suganthan	Tamil Nadu
Master Ramith. K	Kerala
Late Master Ramdinthara	Mizoram
Master Mebin Cyriac	Kerala
Master Koroungamba Kumam	Manipur
Master Sameep Anil Pandit	Maharashtra
Master Mukesh Nishad	Chhattisgarh
Master Viswendra Lohkna	Uttar Pradesh
Master Satendra Lohkana	Uttar Pradesh
Master Vishnu M. V.	Kerala
Master Stripleaseman Mylliem	Meghalalya
Master Pawan Kumar Kanaujiya	Uttar Pradesh
Sapna Kumari Meena	Rajasthan
Master Suhail K. M.	Karnataka

@ **Bharat Award**

* **Geeta Chopra Award**

** **Sanjay Chopra Award**

*** **Bapu Gaidhani Award**

बच्चों की प्रस्तुति

पुरूलिया छऊ नृत्य

पुरुलिया जिले का छऊ नृत्य सर्वाधिक जीवन्त तथा रंगारंग लोक कला रुपों में से एक है । मार्शल पद्धति से उत्पन्न पुरुलिया छऊ नृत्य, नृत्य नाटक का एक सशक्त रुप है, जिसकी विषय–वस्तु दो महान महाकाव्यों, रामायण और महाभारत से ली गई है ।

पुरुलिया छऊ नृत्य की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रस्तुतियों में से एक महिसासुर मर्दिनी है। महिसासुर के अत्याचारों से तंग आकर देवताओं ने देवी आद्यशक्ति महामाया की आराधना की, जिन्होंने दुर्गा देवी का रुप, दुर्गतिनाशिनी धारण किया और असुरों से भयंकर युद्ध के बाद अंत में उसका वध कर दिया।

–पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, कोलकाता

पर्यावरण, संरक्षण तथा सतत् विकास

आज विश्व के सामने प्रमुख चिंता सतत् विकास का एक ऐसा मॉडल अपनाना है, जिसमें हमारे पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना आर्थिक प्रगति सुनिश्चित की जाए । हम अपने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इन बहुमूल्य संसाधनों के नवीकरण और प्रतिपूर्ति की दर से कहीं अधिक तेजी के साथ कर रहे हैं ।

केन्द्रीय विद्यालय मस्जिद मोठ सादिक नगर, नई दिल्ली के छात्र केन्द्रीय विद्यालय संगठन का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जो इस वर्ष अपनी स्वर्ण जयंती मना रहा है । ये छात्र अपने प्रदर्शन के माध्यम से पर्यावरण–संरक्षण के प्रति अपनी चिंता व्यक्त कर रहे हैं तथा जनता में सतत् विकास के लिए जागरूकता उत्पन्न कर रहे हैं ।

–केन्द्रीय विद्यालय, सादिक नगर, नई दिल्ली

31

Children's Pageant

PURULIA CHHAU DANCE

The Chhau Dance of Purulia District is one of the most vibrant and colourful folk art forms. Emerging from martial practice, the Purulia Chhau is a vigorous form of dance-drama that draws its themes from the two great Indian epics, the Ramayana and the Mahabharata.

One of the most popular presentations of the Purulia Chhau Dance is Mahisasur Mardini. Oppressed by the tyranny of the Mahisasura, the Gods pray to Goddess Adyashakti Mahamaya who takes the form of Goddess Durga, Durgatinashini and after a fierce battle with Asura, finally slays him.

-Eastern Zonal Cultural Centre, Kolkata

ENVIRONMENT, CONSERVATION AND SUSTAINABLE GROWTH

A major concern facing the world today is to adopt a sustainable model of growth which ensures economic progress without endangering our environment. We have been extracting our natural resources at a pace which far exceeds the rate of renewal and replenishment of these valuable resources.

The students of Kendriya Vidyalaya, Masjid Moth, Sadiq Nagar, New Delhi, are representing Kendriya Vidyalaya Sangathan, which is celebrating its Golden Jubilee this year, are expressing their concern for conserving the environment and creating awareness among the masses for sustainable growth through their performance.

-Kendriya Vidyalaya, Sadiq Nagar, New Delhi

गणगौर

एल. के. इन्टरनेशनल स्कूल, बवाना के 180 छात्र एवं छात्राएं 'गणगौर' का प्रदर्शन कर रहे हैं । 'गणगौर' नारीत्व का संकेतक है । यह राजस्थान में सदियों से चलन में है । राजस्थान के लोग 'महिलाओं' को शाश्वत बल का प्रतीक मानते हैं जिसे शक्ति कहा जाता है। मूल रूप से इसमें नारीत्व को अत्यधिक सम्मान मिलता है । इसलिए आओ स्त्रीत्व के गौरव और सम्मान को प्रदर्शित करने के लिए पवित्र गणगौर उत्सव मनाएं ।

–एल. के. इन्टरनेशनल स्कूल, बवाना, दिल्ली

GANGAUR

180 Boys & Girls student of L.K. International School, Bawana, Delhi are presenting '**GANGAUR**'. 'Gangaur' symbolizes Femininity. It is being practised for centuries in Rajasthan. The people of Rajasthan assume 'women' as the symbol of ETERNAL MIGHT known as SHAKTI. It basically gives great honour to Femininity. So let's celebrate the pious GANGAUR UTSAV to reveal the dignity and honour to womanhood.

-L.K. International School, Bawana, Delhi

दलखई

राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, अमलवास, दिल्ली के छात्र पश्चिमी ओडिशा का लोकनृत्य दलखई प्रस्तुत कर रहे हैं। यह नृत्य पश्चिमी ओडिशा का सर्वाधिक लोकप्रिय लोकनृत्य है। यह नृत्य कई समारोहों जैसे भाईजौन्तिया, फाल्गुन पुनि, नौखाई आदि में किया जाता है। सम्भलपुर तथा सुन्दरगढ़ जिले की युवा महिलाएं इस नृत्य को प्रस्तुत करती हैं। इस नृत्य में महिलाएं रंगीन सम्भलपुरी साड़ी व पारंपरिक गहने पहनती हैं।

–राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय अमलवास, दिल्ली

DALKHAI

The students of Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Amalvas, Delhi are presenting the Dalkhai folk dance. This dance is very popular in western Odisha. The performance of this dance is very common in all festivals such as Bhaijauntia, Phalgun Puni, Nuakhai etc. The dance is performed by the young women of Sambhalpur & Sundergarh districts. The women are dressed in colourful Sambhalpuri sarees along with traditional jewellery.

-Govt. Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Amalvas, Delhi